आज की मुरली का सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 21-07-14

मुक्ति-जीवनमुक्ति दांता, बेहद के बाप ने आज बार-बार एक ही महावाक्य उच्चारें की अब तुम्हें घर जाना हैं तो अपने को आत्मा समझ निरन्तर बाप को याद करने का अभ्यास करो. आत्मा को सतोप्रधान बनने का यही एक रास्ता हैं और आत्मा सतोप्रधान बने बिना अपने धर नहीं जा सकेगी. तो निरन्तर याद का अभ्यास करते स्वयं की उन्नति का सदा ख्याल रखो (स्वयं को चेक करते रहो).

बाबा ने आज जीतनी बार हम आत्माओं को अपना घर याद दिलाया, उसको एक बार देही-अभिमानी स्थिति में लिखकर बाप और वर्षा को याद करेंगे तो हमारे में बाबा की याद और देही-अभिमानी बनने की प्रैक्टिस भी पक्की होगी.

- बाप ने कहा, बच्चों की बुद्धि में यह ख्यालात रहे कि हम आत्माये, परमधाम से इस सृष्टि चक्र में आये थे तब सतोप्रधान थे.
- अब बच्चे यह तो जानते हैं हम आत्मा इस शरीर को छोड़ जायेंगे अपने घर. बहुत खुशी से जाना हैं.
- सारा दिन चिंतन ही यह करते हैं - हम शान्तिधाम में जायें क्योंकि बाप ने रास्ता तो बताया हैं.
- जितना बाप को याद करेंगे उतना संपूर्ण बन यथा योग्य शान्तिधाम में जायेंगे, उनको ही मुक्ति कहा जाता हैं. शान्तिधाम जाकर बाद में नम्बरवार हम सुखधाम में आयेंगे.
- मनुष्यों को तो बिल्कुल पता नहीं कि मुक्ति-जीवनमुक्ति चीज़ क्या हैं. तुम बच्चे बिल्कुल समझ गये हो अब हमको घर जाना ही हैं. बाप कहते हैं याद की यात्रा से पवित्र बनो.
- बाबा ने कहा, तुम जानते हो अभी यह हमारा अन्तिम जन्म हैं. हमको वापस घर जाना हैं.
- बाप का फ़रमान हैं उठते-बैठते, चलते-फिरते बुद्धि में यही ख्यालात रहें कि हम सतोप्रधान आये थे, अब सतोप्रधान बनकर घर जाना हैं.
- अब तुम बच्चों को यह ख्याल करना हैं हम अपनी उन्नति कैसे करें, अपने धर जाकर फिर नई राजधानी में आकर ऊँच मर्तबा कैसे पाये? इसके लिए हैं याद की यात्रा, अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना.
- बाप कहते हैं तुम्हारा यह अन्तिम जन्म हैं, सारा चक्र लगाकर अन्त में आये हो तो बुद्धि में यही सिमरण रहना चाहिए.
- मुख्य बात बाप अभी बच्चों को समझाते हैं अपने को आत्मा समझो, अब वापिस घर जाना हैं.
- यह शरीर छी-छी हैं, इसको छोड़ना हैं. हमको तो अब धर जाना हैं.

ऐसे सिमरण करते, बाप को याद करने से ही आत्मा सतोप्रधान बन जायेंगी और हल्की बन, उड़कर बाप के पास पहुँच जायेंगी.

ॐ शांति.

Please provide your feedback to Atma Bhai on email: a.brahmin.soul@gmail.com .